वाक्य - संशोधन

(शास्त्री द्वितीय वर्ष)

वाक्य - दो या दो से अधिक पदों के सार्थक समूह को, जिसका पूरा-पूरा अर्थ निकलता है, वाक्य कहते हैं। उदाहरण के लिए -

'सत्य की विजय होती है।'

यह एक वाक्य है, क्योंकि इसका पूरा और सार्थक अर्थ निकलता है। परन्तु इसी को यदि इस प्रकार लिखें कि - 'सत्य विजय होती।' तो यह वाक्य की श्रेणी में नहीं आयेगा। क्योंकि इसका अर्थ अधूरा है।

वाक्य - शुद्धि -

वाक्य भाषा की अत्यन्त महत्वपूर्ण इकाई है। इसलिए परिष्कृत भाषा के लिए वाक्य शुद्धि का ज्ञान अति आवश्यक है। वाक्य-रचना में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय से सम्बंधित या अन्य प्रकार की अशुद्धियाँ हो सकती हैं। अतः कुछ उदाहरणों के माध्यम से हम इन्हें जानने का प्रयास करेंगे -

1. संज्ञा-संबंधी अशुद्धियाँ

1. हिन्दी के प्रचार में आज भी बड़े-बड़े संकट हैं।

शुद्ध - (बड़ी-बड़ी बाधाएँ)

2. सीता ने गीत की दो-चार लड़ियाँ गायीं।

शुद्ध - (कड़ियाँ)

3. नगर की सारी जनसंख्या भूखी है।

शुद्ध - (जनता)

Scanned with CamScanner

4. वह मेरे शब्दों पर ध्यान नहीं देता।
शुद्ध -(मेरी बात पर)

5. मुझे सफल होने की निराशा है।
शुद्ध -(आशा नहीं)

6. इस समस्या की औषधा उनके पास है।
शुद्ध -(का समाधान)

7. गोलियों की बाढ़।
शुद्ध -(बौछार)

8. जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कथा चरितार्थ होती है।
शुद्ध— (कहावत)

भूपेन्द्र सिंह
सहायक प्राचार्य, हिन्दी
अवध विहारी संस्कृत महा-
विद्यालय, रहीमपुर, खगड़िया

Scanned with CamScanner